बढ़ते पर्यटन के कारण अंडमान ट्रंक रोड और पर्यटन स्थल बाराटांग में होने वाले पर्यटकों के जमावड़े के चलते यहां के जंगली क्षेत्रों में रहने वाले जारवाओं पर असर पड़ा है। इसे देखते हए हालांकि एक निगरानी समिति के गठन को फिलहाल मंजूरी मिल गई है, जो इनकी सुरक्षा के मौजूदा नियमों की समीक्षा करेगी और जरूरी संशोधनों की सिफारिश करेगी।

जंगलों की बीच अपनी दुनिया में मस्त रहने वाले आदिम जनजाति के ये लोग नई दुनिया में आकर आधुनिकता की चकाचौंध में भले ही रोमांचित हो उठे हों, पर इससे उनके पारम्पारिक रहन सहन में पड़ने वाला विघ्न इन्हें पीड़ा ही पहुंचाता होगा। देखा गया है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में आमतौर पर आदिम जनजाति के लोगों की अपनी पारम्पारिक विशेषताएं खोती गई है। हमारे द्वीप की आदिम जनजातियां मानव जाति की अमूल्य धरोहर है। इसलिए उनकी सुरक्षा और कल्याण की जिम्मेदारी बदलते परिदृश्य के साथ ही आदिम जनजाति विकास समिति पर और बढ़ गई है। पर इस दिशा में आम जनता को भी अपना योगदान देना होगा।

वन और समुद्र से प्राप्त भोजन का स्वाद लेने वाले इन आदिम जनजाति के लोगों के सामने आधुनिक खान–पान की वस्तुओं को इस तरह परोसना होगा कि उनके स्वास्थ्य पर विपरीत असर न पड़ सके।

हालांकि समय के साथ मानव परिस्थितियों से मुकाबला करना और महौल के अनुसार जीवन जीना सीख लेता है, पर इसमें लम्बा समय लग सकता है। इस दौरान उनके अस्तित्व को कोई खतरा न पहुंच पाए इस दिशा में भी सोचना बेहद जरूरी है।